आकार IAS

Shaping Your Dreams

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं लोक प्रशासन

मुख्य परीक्षा

दार्शनिक | विचारक | समाज सुधारक

प्रश्नपत्र- 04 | इकाई-01

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं लोक प्रशासन
PHILOSOPHY, PSYCHOLOGY AND PUBLIC ADMINISTRATION

इकाई - 1

- **दार्शनिक/विचारक, सामाजिक सुधारक** - सुकारत, प्लेटो, अरस्तू, महावीर, बुद्ध, आचार्य शंकर, चार्वाक, गुरूनानक, कबीर, तुलसीदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर, राजाराम मोहन राय, सावित्री बाई फुले, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द एवं सर्वपल्ली राधाकृष्णन।
- **Philosophers/Thinkers, Social Reformers -** Socrates, Plato, Aristotle, Mahavir, Buddha, Acharya Shankar, Charwak, GuruNanak, Kabir, Tulsidas, Ravindra Nath Tagore, Raja Ram Mohan Roy, Savitribai Phule, Swami Dayanand Saraswati, Swami Vivekanand, Maharshi Arvind and Sarvpalli Radhakrishnan.

इकाई - 2

- **मनोवृत्ति** - विषयवस्तु, तत्त्व, प्रकार्य : मनोवृत्ति का निर्माण, मनोवृत्ति परिवर्तन, प्रबोधक संप्रेषण, पूर्वाग्रह तथा विभेद, भारतीय संदर्भ में रूढ़िवादिता।
- **अभिक्षमता** एवं लोक सेवा हेतु आधारभूत योग्यताएँ, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता एवं असमर्थकवादी, वस्तुनिष्ठता, लोक सेवा के प्रति समर्पण, समानुभूति, सहिष्णुता एवं कमजोर वर्गों के प्रति संवेदना/करूणा।
- **संवेगिक बुद्धि** - अवधारणा, प्रशासन/शासन में इसकी उपयोगिता एवं अनुप्रयोग।
- **व्यक्तिगत भिन्नताएँ।**
- **Attitude -** Content, Elements, Function Formation of Attitude, Attitudinal Change, Persuasive Communication, Prejudice and Discrimination, Stereotypes Orthodox in Indian context.
- **Aptitude -** Aptitude and foundational values for Civil Service, Integrity, Impartiality and Non-partisanship, Objectivity, Dedication to public service, Empathy, Tolerance and Compassion towards the weaker-sections.
- **Emotional Intelligence -** Emotional Intelligence-Concepts, their utilities and application in Administration and Governance.
- **Individual differences**

इकाई - 3

मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा

- **लोक प्रशासन में नैतिक सद्गुण एवं मूल्य** - प्रशासन में नैतिक तत्व-सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व एवं पारदर्शिता, नैतिक तर्क एवं नैतिक दुविधा तथा नैतिक मार्गदर्शन के रूप में अन्तरात्मा, लोक सेवकों हेतु आचरण संहिता, शासन में उच्च मूल्यों का पालन।

Human Needs and Motivation

- **Ethics and Values in Public Administration -** Ethical elements in governance–Integrity, Accountability and Transparency, Ethical Reasoning and Moral Dilemmas, Conscience as a source of ethical guidance. Code of Conduct for Civil Servants, Implementation of Higher values in governance.

इकाई - 4

- **भ्रष्टाचार** - भ्रष्टाचार के प्रकार एवं कारण, भ्रष्टाचार का प्रभाव, भ्रष्टाचार को अल्पतम करने के उपाय, समाज, सूचनातंत्र, परिवार एवं व्हिसलब्लोअर (Whistleblower) की भूमिका, भ्रष्टाचार पर राष्ट्रसंघ की घोषणा, भ्रष्टाचार का मापन, अंतर्राष्ट्रीय पारदर्शिता (ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल), लोकपाल एवं लोकायुक्त।
- **Corruption -** Types and Causes of Corruption, Effects of corruption, Approaches to minimizing corruption, Role of society, Media, Family and Whistleblower, United Nation Convention on Corruption, Measuring corruption, Transparency International, Lokpal and Lokayukt.

इकाई - 5

- **केस स्टडीज** - पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयवस्तु पर आधारित।
- **Case Studies -** Based on the contents of the syllabus.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन का चतुर्थ प्रश्न पत्र में **पूर्णांक 200** है तथा **समय 03:00 घंटे** होगा।

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-1	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-2	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-3	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-4	अति लघु उत्तरीय	05	x	02	=	10	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	20	=	20	200 शब्द
इकाई-5	केस स्टडी	02	x	20	=	40	500 शब्द

नोट - प्रश्नों की संख्या आवश्यकतानुसार कम या अधिक की जा सकेगी।

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	दर्शनशास्त्र : सामान्य परिचय	01 – 08
02	सुकरात	09 – 14
03	प्लेटो	15 – 29
04	अरस्तू	30 – 37
05	चार्वाक	38 – 49
06	शंकराचार्य	50 – 59
07	महावीर	60 – 69
08	बुद्ध	70 – 80
09	गुरूनानक	81 – 85
10	कबीर	86 – 97
11	तुलसीदास	98 – 107
12	रविन्द्रनाथ टैगोर	108 – 114
13	राजा राममोहन राय	115 – 122
14	सावित्रीबाई फूले	123 – 127
15	स्वामी दयानन्द सरस्वती	128 – 134
16	स्वामी विवेकानन्द	135 – 142
17	अरविन्द घोष	143 – 149
18	सर्वपल्ली राधाकृष्णन	150 – 153

दर्शनशास्त्र
Philosophy

- परिचय
- दर्शनशास्त्र का अर्थ
- दर्शनशास्त्र की शाखाएं
  - तत्वमीमांसा
    - ईश्वर
    - आत्मा
    - जगत
  - ज्ञानमीमांसा
    - पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान के साधन
    - भारतीय दर्शन में ज्ञान के साधन
  - नीतिमीमांसा
  - सामाजिक-राजनीतिक दर्शन
    - सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का अर्थ
    - सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का क्षेत्र
    - सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की महत्वपूर्ण विचारधाराएं

परिचय
Introduction

मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। वह अपनी चिंतन प्रक्रिया से इस विशाल विश्व एवं स्वयं को समझने का प्रयास करता है। परिणामस्वरूप उसके समक्ष अनेक प्रश्न एवं समस्याएं उपस्थित होती हैं, जैसे - जगत् क्या है? उसके मूल में कौन-से तत्व है? क्या उसका कोई निर्माता है? यदि है, तो कैसा है? किस उद्देश्य से इस जगत् का सृजन करता है? हम स्वयं, अर्थात् - आत्मा क्या है? मृत्यु क्या है? सत्य क्या है? शुभ क्या है? सौन्दर्य क्या है? नैतिकता क्या है? आदि। ऐसे प्रश्नों का उठना और उन पर मनन-चिंतन करना, वस्तुत: यही दर्शनशास्त्र है। दर्शन मनुष्य के इसी प्रकार के प्रश्नों की उपज है। वह ऐसे ही प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का प्रयास है। सरल शब्दों में कहे, तो दर्शन विश्व और जीवन को उसकी समग्रता में समझने का एक प्रयास है।

दर्शनशास्त्र का अर्थ
Meaning of Philosophy

भारतीय दर्शन में शाब्दिक उत्पत्ति की दृष्टि से दर्शन शब्द का अर्थ है - "**दृश्यते अनेन इति दर्शनम्**", अर्थात् - **सूक्ष्म, तार्किक तथा विवेक की दृष्टि से** जो सामान्यत: दिखाई देता है, उसमें भी निहित सत्य को देखना ही दर्शन है। इसे ही **प्रज्ञा की आखों** से देखना कहते हैं।

पाश्चात्य दर्शन में फिलॉसफी (Philosophy) शब्द के नाम से जाना जाता है, जो 02 ग्रीक शब्दों - फिलॉस (Philos) + सोफिया (Sophia) से मिलकर बना है । **फिलॉस** का अर्थ है - **प्रेम** और **सोफिया** का अर्थ है - **ज्ञान**। इस प्रकार फिलॉसफी का अर्थ है - **ज्ञान के प्रति प्रेम या अनुराग** (Love for Knowledge)। किन्तु प्रश्न उठता है कि किस ज्ञान के प्रति प्रेम? तो उत्तर है - जीवन और जगत् के प्रति सूक्ष्म, तार्किक एवं विवेकसम्मत ज्ञान के प्रति प्रेम।

इस तरह हम देखते हैं कि भारतीय व पाश्चात्य दोनों ही दर्शन में चिंतन का प्रारंभ जीवन-जगत् के सत्य की खोज से हुआ है। किन्तु दोनों में यहां अन्तर यह है कि भारतीय दर्शन का प्रारंभ एक व्यवहारिक समस्या से हुआ है और वह समस्या है - जीवन और जगत् में व्याप्त दु:खों से मुक्ति पाना, वहीं पाश्चात्य दर्शन का मुख्य उद्देश्य जीवन और जगत् के प्रति विशुद्ध सैद्धान्तिक और ज्ञानात्मक ही रहता है।

दर्शनशास्त्र की शाखाएं
Branches of Philosopy

दर्शनशास्त्र में निम्नलिखित शाखाओं/विषयों पर विशेष रूप से विचार होता है -

1. तत्वमीमांसा (Metaphysics)
2. ज्ञानमीमांसा (Epistomology)
3. नीतिमीमांसा (Ethics)
4. सामाजिक-राजनीतिक दर्शन (Socio-political Philosophy)

❒ तत्वमीमांसा (Metaphysics)

तत्वमीमांसा दर्शनशास्त्र की वह शाखा है, जो **जीवन एवं जगत् के अंतिम तत्व की खोज** कर उसके परम स्वरूप का विवेचन करती है। इसमें मुख्यत: ईश्वर, आत्मा और जगत् का अध्ययन किया जाता है।

• ईश्वर (God)

तत्वमीमांसा के अन्तर्गत सर्वप्रथम ईश्वर विषय पर चिंतन किया जाता है। इसमें दार्शनिक ईश्वर के अस्तित्व, उसका स्वरूप एवं उसकी संख्या आदि पर विचार करते है।

◆ ईश्वर का सत्ता

तत्वमीमांसा के अन्तर्गत ईश्वर की सत्ता के विषय में 03 विचारधाराएं हैं - ईश्वरवाद, अनीश्वरवाद एवं अज्ञेयवाद।

1. **अनीश्वरवाद (Atheism)** - इससे आशय एक ऐसी विचारधारा से है, जो **ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं** करता है। उदाहरणार्थ - जैन, बौद्ध, चार्वाक, सांख्य एवं मीमांसा दर्शन।
2. **ईश्वरवाद (Theism)** - इससे आशय एक ऐसी विचारधारा से है, जो **ईश्वर की सत्ता में विश्वास** करता है। उदाहरणार्थ - वेदान्त दर्शन, न्याय-वैशेषिक दर्शन, योग दर्शन आदि। इसके अलावा विश्व के अधिकांश धर्म जैसे - हिन्दू, इस्लाम, इसाई, यहूदी, पारसी आदि भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं।
3. **अज्ञेयवाद (Agnosticism)** - इससे आशय एक ऐसी विचारधारा से है, जो यह मानती है कि **ईश्वर की सत्ता का ज्ञान प्राप्त करना मानवीय क्षमता के बाहर** है। मनुष्य अपने बुद्धि और अनुभव से न तो ईश्वर के अस्तीत्व को जान सकता है और न ही नास्तित्व को।

अनीश्वरवादी एवं अज्ञेयवादी दार्शनिकों के समक्ष ईश्वर के स्वरूप, आकार एवं संख्या को लेकर कोई प्रश्न उत्पन्न नहीं होता है, किन्तु ईश्वरवादी दार्शनिकों में ईश्वर के स्वरूप, आकार एवं संख्या को लेकर अलग-अलग मत हैं, जो निम्नलिखित हैं -

◆ ईश्वर का स्वरूप

निर्गुण और निराकार (Nirguna) एवं सगुण और साकार (Saguna)।

◆ ईश्वर की संख्या

एकेश्वरवाद (Monotheism), द्वीश्वरवाद (Ditheism) एवं अनेकेश्वरवाद (Polytheism)।

1. **एकेश्वरवाद (Monotheism)** - एकेश्वरवाद वह विचारधारा है, जिसमें **एक ही ईश्वर की सत्ता** को स्वीकार किया जाता है, जैसे - ईसाई, इस्लाम, यहूदी, सिक्ख आदि।
2. **द्वीश्वरवाद (Ditheism)** - द्वीश्वरवाद वह विचारधारा है, जिसमें **दो ईश्वर या दो परम सत्ताओं** को स्वीकार किया जाता है, जैसे - पारसी धर्म, चीनी धर्म आदि।

3. **अनेकेश्वरवाद (Polytheism)** – अनेकेश्वरवाद वह विचारधारा है, जिसमें **अनेक ईश्वर की सत्ता** को स्वीकार किया जाता है। यह विचार मुख्यत: प्राकृतिक धर्मों के समय विकसित हुआ। जब मनुष्य प्रकृति की विभिन्न घटनाओं को समझ नहीं पाता था, तो उसने सभी प्राकृतिक घटनाओं के अनुसार ईश्वर की कल्पना कर दी। उदाहरणार्थ – शिन्तो धर्म, (80 लाख देवी-देवता), बेबीलोनियाई धर्म (अनु, बेल, इला नामक तीन ईश्वरों में विश्वास), मिस्र का धर्म, यूनानी धर्म, वैदिक धर्म आदि।

- **आत्मा (Soul)**

आत्मा का अर्थ एक **चेतन द्रव्य** (Conscious Substance) से है, जो **शरीर, बुद्धि तथा मन से भिन्न** है और जो शरीर की मृत्यु के बाद भी समाप्त नहीं होती। इस संदर्भ में 02 विचारधाराएं हैं – आत्मवाद तथा अनात्मवाद।

1. **आत्मवाद (Soul Theory)** – आत्मवाद भारतीय चिंतन परम्परा का एक दर्शन है। इसके अनुसार जीवधारियों में एक आत्मा होती है, जो अनादि और अनन्त है। इसका न जन्म होता है और न ही निधन। यह नित्य एवं शाश्वत है। आत्मा को चैतन्य स्वरूप कहा गया है।
2. **अनात्मवाद (No Soul Theory)** – इससे आशय है कि जो आत्मा की **स्थायी सत्ता को स्वीकार न करता** हो।

- **जगत् (World)**

मानव मन में इस विशाल विश्व को देखकर स्वभावत: यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जगत् क्या है, जगत् का निर्माण कैसे हुआ, किससे हुआ, किसने किया, कब किया आदि। विभिन्न दार्शनिकों ने इस प्रश्न के भिन्न-भिन्न उत्तर दिए है। तत्वमीमांसा के अन्तर्गत हम जगत् का निर्माण, जगत् का मूल तत्व एवं ईश्वर व जगत् के सम्बन्ध में विचार करेंगे।

- **जगत् का निर्माण**

जगत् निर्माण के संदर्भ में 02 विचारधाराएं प्रचलित हैं –

1. **सृष्टिवाद (Creationism)** – इसके अनुसार **विश्व का सृष्टिकर्ता ईश्वर** है। ईश्वर सभी तरह से पूर्ण और सर्वशक्तिमान है, वह अनादि तथा अजन्मा है और उसका अंत कभी नहीं होता है। कभी सिर्फ वहीं था और विश्व नहीं था। किसी खास समय में उसे विश्व को उत्पन्न करने की इच्छा हुई और उसने विश्व की सृष्टि कर डाली। विभिन्न धर्मों में ईश्वर द्वारा विश्व की सृष्टि के सम्बन्ध में कुछ विभिन्न प्रकार की कहानियां है, किन्तु सभी का सार यही है कि ईश्वर ने अपनी इच्छा से विश्व की सृष्टि की।
2. **विकासवाद (Evolutionism)** – विकासवाद विश्व को किसी के द्वारा **एक ही बार में की गई सृष्टि का परिणाम नहीं** मानता है बल्कि यह विश्व अनेक वर्षों के **क्रमिक विकास के परिणाम** है। इसमें सतत् परिवर्तन होते रहते है तथा उसका स्वरूप सदैव एक ही प्रकार का नहीं रहा है। कुछ दार्शनिक यह मानते है कि विकास की क्रिया कुछ आंतरिक प्राकृतिक नियमों के द्वारा स्वत: संचालित होती है, कोई बाहरी शक्ति (ईश्वर) इसे संचालित नहीं करती है। किन्तु कुछ विकासवादी दार्शनिक ईश्वर में विश्वास करते है। अत: वह विकास की क्रिया में ईश्वर के हस्तक्षेप को स्वीकार करते है। विकासवाद के भी 02 प्रकार है –
   a. **यंत्रवादी (Mechanistic)** – यंत्रवादी विकासवाद वह सिद्धान्त है जो विकास की क्रिया का कोई प्रयोजन व लक्ष्य नहीं मानता है। बल्कि यह मानता है कि विकास एक लक्ष्यहीन रूप में प्राकृतिक नियमों के द्वारा संचालित है।
   b. **प्रयोजनवादी (Teleological)** – प्रयोजनवादी विकासवाद वह सिद्धान्त है जो विकास की क्रिया के पीछे निहित कोई प्रयोजन व लक्ष्य मानता है।

- **जगत् का मूलतत्व**

तत्वमीमांसा के अन्तर्गत जगत् के सम्बन्ध में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जगत् का मूलतत्व क्या है? वह चेतन है या जड़ है। इस सम्बन्ध में भी 02 विचारधाराएं मिलती है, जो निम्नलिखित हैं –

1. **अध्यात्मवाद/प्रत्ययवाद (Spiritualism/Idealism)** – यह एक ऐसी विचारधारा है, जो यह विश्वास करती है कि **जगत् परमात्मा और उसके गुणों की अभिव्यक्ति** है। विश्व उसी की अभिव्यक्ति या उसकी छाया मात्र है। इसके अनुसार विश्व में जो कुछ भी जड़ या भौतिक मालूम पड़ता है, वह भी चेतन का ही एक रूप या अभिव्यक्ति है। उदाहरणार्थ – प्लेटो, शंकर।
2. **भौतिकवाद (Materialism)** – यह एक ऐसी विचारधारा है, जो यह विश्वास करती है कि **जगत् का मूलतत्व जड़ द्रव्य** या भौतिक द्रव्य (Matter) है और संसार की समस्त तत्व, चाहे वह जड़ या चेतन, उसी से उत्पन्न या निर्मित है। सरल शब्दों में भौतिकवादी यह मानते हैं कि जड़ जगत् के साथ चेतना का जन्म भी भौतिक द्रव्य से ही हुआ है। भौतिकवादी स्वभावत: **अनीश्वरवादी एवं प्रकृतिवादी** हो जाते हैं, क्योंकि वह विश्व की उत्पत्ति एवं विनाश आदि के लिए किसी बाह्य आध्यात्मिक शक्ति आदि को नहीं मानते हैं। इनके अनुसार सब कुछ बिल्कुल प्राकृतिक रूप से, प्रकृति के नियमों से ही नियंत्रित एवं संचालित होता है। उदाहरणार्थ – चार्वाक, कार्ल मार्क्स आदि।

◆ ईश्वर एवं जगत् में सम्बन्ध

ईश्वरवादियों के समक्ष एक प्रमुख समस्या यह भी है कि ईश्वर और जगत् में क्या सम्बन्ध है? इस सम्बन्ध में विभिन्न चिंतकों एवं धर्मों में प्रमुख अवधारणाएं दिखाई देती हैं –

1. **केवल निमित्त कारण/देववाद (Deism)** – यह सिद्धान्त ईश्वर को सगुण-साकार, व्यक्तित्वपूर्ण, चेतन, अनन्त एवं पूर्ण मानता है। इसमें **ईश्वर को जगत् को निमित्त कारण** माना जाता है। ईश्वर ही संसार की सृष्टि करता है। किन्तु सृष्टि करने के पश्चात् वह इससे परे चले जाता है। वह संसार की क्रियाशीलता में **कोई भी हस्तक्षेप नहीं** करता है एवं उसे स्वयं चलने देता है। इसमें ईश्वर का जगत् के साथ ठीक वैसा ही सम्बन्ध है, जैसा किसी घड़ीसाज का घड़ी से।
2. **केवल उपादान कारण/सर्वेश्वरवाद (Pantheism)** – यह सिद्धान्त ईश्वर को निर्गुण-निराकार, व्यक्तित्वविहीन मानता है। सर्वेश्वरवाद का अर्थ है – सब कुछ ईश्वर है और ईश्वर सब कुछ है (All is God and God is All)। इस सिद्धान्त के अनुसार **जगत् और ईश्वर एक** ही है, इनमें अभिन्नता, तादात्म तथा एकत्व का सम्बन्ध है। ईश्वर विश्व का उपादान कारण है, विश्व उसका अनिवार्य परिणाम। सरल शब्दों में ईश्वर के अलावा अन्य किसी भी चीज का वास्तविक अस्तित्व नहीं है।
3. **निमित्त उपादान कारण (Panentheism)** – इसके अनुसार **ईश्वर जगत् का निमित्त और उपादान कारण दोनों है।** उपादान कारण इसलिए क्योंकि वह जगत् में शामिल है और निमित्त कारण इसलिए कि वह जगत् से परे भी है। अत: वह विश्वातीत और विश्वव्यापी दोनों है।

❐ ज्ञानमीमांसा (Epistomology)

आधुनिक दर्शन में तत्वमीमांसा के विवेचन के साथ-साथ ज्ञानमीमांसा के भी बौद्धिक विवेचन पर जोर दिया गया है। तत्वमीमांसा में हम परम तत्व के साक्षात्कार या ज्ञान की बात करते हैं, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या मानव के पास परम तत्व के **ज्ञान हेतु साधन** उपलब्ध हैं? **ज्ञान क्या है**? हम **किन साधनों** से ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं? यह साधन **किस सीमा तक** और **कैसा ज्ञान** हमें प्रदान कर सकता है? आदि महत्वपूर्ण प्रश्नों की चर्चा ज्ञानमीमांसा में की जाती है।

ज्ञानमीमांसा के महत्व को दर्शाते हुए जॉन लॉक कहते हैं कि "जिस तरह युद्ध में जाने के पूर्व एक सिपाही के लिए यह आवश्यकत है कि वह अपने अस्त्रों की ठीक से जाँच कर ले, उसी प्रकार दर्शन के जगत् मे उतरने के पूर्व दार्शनिक के लिए आवश्यक है कि वह ज्ञान ले कि वे साधन जिनसे वह दार्शनिक चिन्तन करने जा रहा है, ठीक हैं या नहीं।"

● पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान के साधन

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के 02 साधन माने गए हैं – बुद्धिवाद (Rationalism) एवं अनुभववाद (Empiricism)।

◆ बुद्धिवाद (Rationalism)

बुद्धिवाद ज्ञानमीमांसा का वह सिद्धान्त है, जिसके अनुसार मनुष्य के वास्तविक **ज्ञान का एकमात्र स्रोत बुद्धि** है। इसकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

1. यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र स्रोत बुद्धि ही होती है।
2. यह बुद्धि सदा सक्रिय, आत्मचेतन तथा अनुभव निरपेक्ष होती है।
3. हमारा समस्त ज्ञान अनुभव पूर्व होता है, अर्थात् – ज्ञान अनुभव से पूर्व ही होता है।
4. हमारी बुद्धि/आत्मा में कुछ जन्मजात प्रत्यय (Innate Idea) होते हैं, जैसे – आत्मा का प्रत्यय, ईश्वर का प्रत्यय, कार्य-कारण का प्रत्यय आदि।
5. जिस तरह मकड़ी अपने भीतर से जाले का निर्माण करती है, उसी तरह बुद्धि अपने जन्मजात प्रत्ययों से समस्त ज्ञान का निर्माण करती है। इसीलिए हमारा यथार्थ ज्ञान अनुभव से पूर्व है।
6. जिस तरह गणित के नियम सार्वभौमिक (Universal), असंदिग्ध (Certain) एवं अनिवार्य (Necessary) होते हैं, उसी तरह हमारा समस्त बुद्धिजन्य ज्ञान सार्वभौम, असंदिग्ध एवं अनिवार्य होता है।

• अनुभववाद (Empiricism)

अनुभववाद ज्ञानमीमांसा का वह सिद्धान्त है, जो समस्त ज्ञान का स्रोत **बाह्य इंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव** को मानता है। इसकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

1. यह बुद्धिवाद विरोधी विचार प्रस्तुत करता है।
2. इसके अनुसार हमारी बुद्धि निष्क्रिय है। हमें जो कुछ भी ज्ञान मिलता है, वह केवल अनुभव, अर्थात् – इंद्रियों के माध्यम से मिलता है।
3. अनुभववादी जन्मजात प्रत्ययों के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं।
4. अनुभववादियों का मानना है कि हमारे ज्ञान का निर्माण अनुभव से संवेदनाओं द्वारा प्राप्त प्रत्ययों के आधार पर चिन्तन क्रियाओं द्वारा होता है।
5. अनुभववाद के अनुसार हमारा ज्ञान असीम है। वस्तुत: हम उन्हीं वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारे इंद्रिय अनुभव की सीमा में आते हैं। जो वस्तुएं हमारे अनुभव का विषय नहीं बन सकती, उनका ज्ञान हमें कदापि (ईश्वर, आत्मा आदि) नहीं हो सकता।
6. अनुभववादियों का मानना है कि हमारा ज्ञान सार्वभौम, अनिवार्य एवं यथार्थ नहीं होता है। चुंकि वह अनुभव पर आधारित होता है, अत: भविष्य में उसके खण्डन होने की पूर्ण सम्भावना रहती है।

• भारतीय दर्शन में ज्ञान के साधन

भारतीय दर्शन में ज्ञान के 06 साधन माने गए हैं –

1. **प्रत्यक्ष** – जो ज्ञान **इंद्रियों** (Sense Organ) और **पदार्थों** (Object) **के सन्निकर्ष** (Contact) **से उत्पन्न** हो उसे प्रत्यक्ष कहते है।
2. **अनुमान** – अनु का अर्थ है – 'पश्चात्' तथा मान का अर्थ है – 'ज्ञान'। अत: अनुमान का अर्थ है – **पश्चात् ज्ञान**, अर्थात् – वह ज्ञान जो एक ज्ञान के बाद आए। सरल शब्दों में **प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष का ज्ञान**। उदाहरणार्थ – पहाड़ पर धुआं देखकर आग होने का ज्ञान अनुमान है।
3. **शब्द** – किसी **विश्वस्त व्यक्ति के कथनानुसार** जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द कहते है।
4. **उपमान** – उपमान का अर्थ है – उपमा, अर्थात् – **सादृश्यता के आधार पर प्राप्त ज्ञान**। उदाहरणार्थ – हमने कभी नीलगाय नहीं देखी पर हमें पता है कि जंगल में रहने वाली नीलगाय गाय के सादृश्य प्राणी है। अब हम यदि जंगल में गाय के समान प्राणी देखते है तो हमें ज्ञान हो जाता है कि यह नीलगाय है। स्पष्ट है कि यहां नीलगाय का ज्ञान गाय के सादृश्य से हुआ है।
5. **अर्थापत्ति** – अर्थापत्ति का अर्थ है – **किसी विषय की कल्पना करना**। जब किसी प्रत्यक्ष या घटना को समझने में कुछ विरोधाभास होता है तो उससे विरोधाभास की व्याख्या के लिए हम कोई आवश्यक कल्पना करते है। इस तरह जो आवश्यक कल्पना की जाती है उससे अर्थापत्ति कहते है। उदाहरणार्थ – देवदत्त दिन में कभी खाना नहीं खाता फिर भी वह मोटा होता

जा रहा है। खाना न खाना और मोटा होना में विरोधाभास दिखता है। अत: इस विरोधाभास की व्याख्या के लिए हम कल्पना करते है कि देवदत्त रात में भोजन करता है।

6. **अनुपलब्धि** – किसी विषय के **अभाव का साक्षात् ज्ञान** हमें अनुपलब्धि द्वारा प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ – इस कमरे में घड़े का अभाव है। अभाव का प्रत्यक्ष ही अनुपलब्धि है।

❒ नीतिशास्त्र (Ethics/Moral Philosophy)

नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र की वह शाखा है, जिसमें **मानव आचरण का मूल्यांकन** किया जाता है। शब्द विज्ञान के अनुसार एथिक्स शब्द ग्रीक शब्द एथौस से लिया गया है, जिसका अर्थ है – रीति-रिवाज, प्रचलन या आदत। नीतिशास्त्र को मॉरल फिलॉसफी भी कहते हैं। मॉरल शब्द लैटिन शब्द मॉरेस से लिया गया है, जिसका अर्थ भी रीति-रिवाज या अभ्यास है। इस प्रकार नीतिशास्त्र एक ऐसा शास्त्र है, जो मनुष्य के रीति-रिवाजों, आदतों एवं व्यवहारों का मूल्यांकन कर उसके उचित-अनुचित का विवेचन करता है।

❒ सामाजिक-राजनीतिक दर्शन (Socio-political Philosophy)

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने जीवन को बेहतर और व्यवस्थित तरीके से जीना चाहता है, किन्तु वह अपने इस उद्देश्य को वह अकेले पूरा नहीं कर सकता है। इसकी पूर्ति के लिए एक आदर्श सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता होती है। ऐसे आदर्श सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था की रूपरेखा निर्धारित करना सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का कार्य है।

• सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का अर्थ

वस्तुत: सामाजिक-राजनीतिक दर्शन दर्शनशास्त्र की एक शाखा है। सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का अर्थ है – **समाज एवं राज्य का दार्शनिक दृष्टि से विवेचन**। ये समाज एवं राज्य के विषय में आदर्शों, मूल्यों और मानकों का दार्शनिक निर्धारण करते हैं। साथ ही यह भी निर्धारित करते हैं कि मानव के सम्बन्ध में एक आदर्श सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप कैसा होना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि यह समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र से भिन्न है। समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र भी समाज और राज्य के विषय में अध्ययन करते हैं, किन्तु इनके अध्ययन का दृष्टिकोण तथ्यात्मक, वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक है। ये स्पष्ट करते हैं कि उनकी विषयवस्तु क्या है? वे इस बात का विश्लेषण करते हैं कि मानव के सम्बन्ध में सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का क्या स्वरूप है?

जबकि इसके विपरीत, सामाजिक राजनीतिक दर्शन मानकीय (Normative) होने के कारण समाज एवं राज्य के मानकों या आदर्शात्मक मानदण्डों का निर्धारण करते हैं। वह यह भी स्पष्ट करते हैं कि हमें क्या करना चाहिए? मानव के संबंध में आदर्श सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप कैसा होना चाहिए, जिसमें मानव का सर्वांगीण विकास हो सके। इस तरह समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र प्राथमिक अध्ययन (First Order enquiry) है, जबकि सामाजिक-राजनीतिक दर्शन द्वितीयक अध्ययन (Second Order Enquiry) है।

समाज व राज्य सतत परिवर्तनशील संस्था है। बदलती हुई परिस्थितियों में मानव की आवश्यकताएं भी परिवर्तित होती हैं परिणामस्वरूप सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक क्षेत्रों में परंपरागत मूल्य अप्रासंगिक होने लगते हैं और उनके स्थान पर नवीन एवं प्रगतिशील मूल्यों की स्वीकृति अपेक्षित हो जाती है। इस कारण मानव हित में समाज के आदर्शों, लक्ष्यों और मूल्यों को निर्धारित करने के लिए सामाजिक-राजनीतिक दर्शन निरंतर प्रयासरत रहता है।

• सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का क्षेत्र (Scope of Socio-political Philosophy)

1. सामाजिक-राजनीतिक दर्शन विभिन्न राजनीतिक-सामाजिक मूल्यों एवं विचारधाराओं का अध्ययन करता है। इस संदर्भ में वह स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व, कर्तव्य आदि मूल्यों की अवधारणाओं का स्पष्ट करता है। इसके अलावा विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं – उदारवाद, समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद, फासीवाद, अस्तित्ववाद आदि का मूल्यांकन करता है।
2. सामाजिक-राजनीतिक दर्शन विवाह, परिवार, वर्ण-व्यवस्था, जाति-व्यवस्था आदि सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन करता है। यह बताता है कि विविधता से भरे समाज में कैसे सामाजिक मूल्य होने चाहिए।